श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 8

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर जानेवारी - 2022

विद्यार्थी का नाम:

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	नियतिवाद
(२)	सोमप्रभसूरिजी
(३)	निवृत्तिसुक्रिया
(४)	श्रीपार्श्वचंद्रसूरिजी
(५)	महाभारी
(६)	पांच समवाय
(७)	न्याय विशारद
(८)	विकलेंद्रिय
(८)	- -
(९)	अजितनाथजी
(१०)	औदारिक
(११)	वीतरागकेविज्ञान
(१२)	आत्मसाधक
(१३)	चरमावर्तकाल
(१४)	शुभकर्म
(१५)	तेउकाय
(१६)	आजीविका
(१७)	विजयादेवी
(१८)	तर्ककर्कश
(१९)	समुद्घात
(२०)	सुधर्मास्वामी

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	नियतीवाद
(२)	डभोइनगर
(३)	शांतिस्तव (लघु)
(४)	सुर्यकी
(५)	मोक्षप्राप्ति
(६)	ऐंकारका
(७)	अणाहारी
(८)	शांतिनाथ
(९)	तीसरायाचौथाआरा
(१०)	कपार
(११)	कर्मके
(१२)	पुरुषार्थ
(१३)	अंतर्मुख
(१४)	मध्यम आयुष्यवाले
(१५)	सिध्दसेनदिवाकर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	युक्त
(२)	हाथमेरखेहुए
(३)	उसमे
(४)	सिवाय

(५)	उत्पन्न होते है
(६)	प्राप्त करते है
(७)	भोगना
(८)	देव
(९)	इसतरह
(१०)	उत्पन्न होते है
(११)	काययोग
(१२)	स्तवना
(१३)	काय
(१४)	पृथ्वीपीठ
(१५)	एवम्
(१६)	तुछ होगइ
(१७)	करके
(१८)	सूर्य
(१९)	मथनी
(२०)	छोडकर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	6	(६)	3
(२)	10	(७)	9
(३)	7	(८)	4
(४)	1	(९)	2
(५)	8	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	6
(२)	19
(३)	108
(४)	7
(५)	66
(६)	6
(७)	500
(८)	12
(९)	19
(१०)	32

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	19
(२)	×	(२)	2
(३)	✓	(३)	15
(४)	×	(४)	5
(५)	✓	(५)	8
(६)	×	(६)	20
(७)	×	(७)	12
(८)	✓	(८)	8
(९)	×	(९)	20
(१०)	✓	(१०)	3

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण
20	15	9.5	10	10	10	10	15	99.5

रीमार्क

जांचनेवाले की सही

प्रश्न - ८

१. शांतिके गृहसमान, प्रशमरस निमग्न और अशिव का नाश करनेवाले, व्यवस्थित वचनवाले भगवान, द्रव्य तथा भावपूजा के योग्य, जयवान, यशस्वी, योगीश्वर हे शांतिनाथ भगवान आपकी महीमा अपरंपार है, आप अनेक गुणोसे भरपूर है. आपकी विशेषताए कैसे कहु ? अल्प बुद्धीवाले हम लोग क्या कहे, आप तो चोत्रीस अतिशयरुप महासंपतिसे युक्त हो. प्रशस्त हो, त्रैलोक्यपूजित हो, शांति के अधिपति हो, देवसमुहसे पूजित हो, अजिन हो, विश्व मे शांति करनेवाले और लोगोका रक्षण करनेमे तत्पर, दुष्ट ग्रह, भूत, पिशाच, शाकीनीके उपद्रव को दुर करनेवाले आपको नमस्कार हो।

२. पृथ्वीकायादि दस पदोमेसे निकले हुए जीव तेऊकाय और वायुकायमे उत्पन्न होते है पृथ्वीकायादिदस पद याने पांचस्थावर (पृथ्वी, अप, तेऊ, वाऊ और वनस्पतीकाय, तीन विकलेंद्रिय (बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरींद्रिय) गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य दस पदोमेसे ही तेऊकाय, वायुकायमे जाते है। पृथ्वीकाय, अपृकाय और वनस्पतिकाय मे नारकी छोडकर सभीजीव अपने अपने कर्मानुसार उत्पन्न होते है, नारकी को छोडकर सभीजीव पृथ्वी, अप औरवनस्पतिकायमे उत्पन्न होते है।

३. आत्मा स्वस्वभावमे रहे हुए आत्मप्रदेशोका सात कारणोसे पर स्वभाव परिणमाता है उसे समुदघा कहते है उसके सात कारण ① वेदना समुदघात ② कषाय समुदघात ③ वैक्रीय ④ मरण ⑤ तेजस ⑥ आहारक और ⑦ केवली समुदघात, यह केवली समुदघात केवलज्ञानीको ही होता है, अन्य को नही, वेदनीय कर्मोकी स्थीतीसे आयुष्यकर्मकी स्थीति अल्प हो, तब दोनोको समान करनेके लिए प्रथमसमयमे आत्मप्रदेशोको उर्ध्व, अधोलोकान्त तक शरीरसे बाहर निकालकर दंड बनाना, फिर दुसरे समयमे कपाट बनाना तीसरे समयमे मंथनीकी रचना, चोथे समयमे आत्मप्रदेशोसे चौदहराज लोक भरना कर्मोकी स्थितिको समान कर पुन: समेटना, आठ समयमे केवली समुदघात की विधि संपुर्ण होती है।

४. महोपाध्याय श्री यशोविजयजी म. माताके साथ उपाश्रय मे जाते और भक्तामर स्तोत्र पाठ सुनते, और सुनते सुनते उन्हे वो पाठ कंठस्थ हो गया. मुनिश्री यशोविजयजी की तेजस्विता बुद्धिप्रतिभा और सुयोग्यता जानकर श्रेष्ठी श्रीधनजी सुराने अपने द्रव्यसे महात्मा को काशीमे जिनशासनको दुसरे हरिभद्रसुरि या हेमचंद्रसुरि म.सा. मीलेंगे ऐसी भावना, गंगा नदी के किनारे ऐं कारके जापसे श्रीसरस्वतीदेवी प्रसन्न कर वरदान प्राप्त किया. काशीमे तीन बरस, आगरामे चार बरसतक विद्वान भट्टाचार्यके पास षटदर्शनका गहनअध्ययन कीया, काशीमे स्याद्वादका आलंबन लेकर विजय प्राप्त किया, न्यायविशारद औरन्यायाचार्य की बिरुद से भुषीत हुए. १०८ ग्रंथकी रचना,

५. कार्यसिध्दिमे काल वगैरे पांच कारण होते है, काल, स्वभाव, नियति, पुरुषार्थ और कर्म, आखरी तीन कारणमे नियति - स्वभावसे जीव भव्य हो, काल अनुकूल हो फिरभी नियति अनुकूल न होने कार्यसिध्द नही होता, पुरुषार्थ - सब अनुकूल होनेपर भी जीव पुरुषार्थ नही करता तो वो सिद्धी नही पाता, और कर्म - बीजको उगानेके लिए पुरुषार्थ करे पर भाग्यमे न हो तो सफलता नही मीलती, और इसीलिए प्रत्येक कार्यकी सिद्धिमे पांचो कारण समझना और प्रयत्नशी